

गया जिला का पर्यावरणीय धटनाये तथा प्रकोप

डॉ० अजय कुमार

सहायक शिक्षक

पर्यावरणीय धटनाएँ जब चरम रूप धारण कर लेती हैं तो उनसे मानव सहित सम्पूर्ण जैव जगत कठिनाइयों में पड जाता है और कभी – कभी विनाश की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी धटनायें कभी – कभी इतनी एकाएक घटित होती हैं कि सम्भल पाना कठिन हो जाता है। जब इनका प्रभाव क्षेत्रीय होता है तो सम्पूर्ण राष्ट्र अकान्त हा जाता है। प्रकृति की इन चरम धटनाओं के सामने कभी – कभी मनुष्य असहाय हो जाता है जैसे ज्वालामुखी या भुकम्प ऐसी धटनायें प्रकृति की सामान्य परिवर्तन क्रिया से उत्पन्न होती है। पर कभी– कभी इनकी गहनता के लिए मानव की कुछ अनुक्रियाएँ सहायक बन जाती है जैसे वन विनाश से मौसमी धटनाओं की बढ़ती उग्रता। ऐसी विनाशकरी प्राकृतिक धटनाओं को प्राकृतिक आपदा पर्यावरणीय प्रकोप पर्यावरणीय आघात किया जाता है।

पर्यावरणीय प्रकोपों के प्रकार :

पर्यावरणीय प्रकोपों को जहाँ एक ओर प्रकृति की धटना के रूप में पाया जाता है वहीं दूसरी ओर इनमें से कुछ का सम्बन्ध मानवीय कार्यकलापों के कारण बताया जाता है। इस आधार पर प्राकृतिक आपदाओं को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है:-

1. प्राकृतिक प्रकोप और
2. मानव जन्य संकट.

प्राकृतिक प्रकोप धटना चक्र के रूप में आते-जाते रहते हैं। उदाहरणार्थ- बाढ़ सूखा चक्रवात भूकम्प ज्वालामुखी महामारी आदि। जब मनुष्य उनसे प्रभावित होता है तो ये धटनाएँ भौगोलिक अध्ययन का अंग बन जाती है क्योंकि इससे मानवीय सुविधाएँ प्रभावित होती है। मनुष्य अपने कार्यों से प्राकृतिक संकटों की उत्पत्ति करता है या उन्हें बढ़ाता है जैसे वन विनाश से बाढ़ सूखा और भूमि क्षरण का संकट अपशिष्ट पदार्थों से वायु मिट्टी जल आदि के प्रदूषण का संकट बाँध सड़क चार्ट द्वारा दिखाया जा सकता है।

पर्यावरणीय प्रकोप :

1 प्राकृतिक प्रकोप

क :- पार्थीव प्रकोप

ख :- वायुमंडलीय प्रकोप

2 मानव जन्य प्रकोप

क :- भैतिक प्रकोप

ख :- सामाजिक प्रकोप

ग :- जैवीय प्रकोप

भूकम्प से हानियाँ:

भूकम्प का शाब्दिक अर्थ है:- पृथ्वी का काँप जाना। कभी-कभी एकाएक हमारी पृथ्वी में आये इस कंपन को भूकम्प कहते हैं। यह एक अचानक एवं अप्रत्यासिक क्रिया है।

भूकम्प की उत्पत्ति के अनेक कारणों में दो कारण प्रमुख बताये जाते हैं :-

(क) ज्वालामुखी की क्रिया और

(ख) पृथ्वी के भीतरी परिवर्तन

ज्वालामुखी प्रदेशों में प्रायः भूकम्प आया करते हैं। जब-जब ज्वालामुखी के मुँह से लावा आदि निकलते हैं तब-तब आस-पास की जमीन काँप जाती है पर इस प्रकार के भूकम्प का प्रभाव बहुत दूर तक नहीं पडता। अतः विस्फोट होने के बहुत पहले से विस्फोट होते समय तथा विस्फोट होने के बाद तक स्थानीय भूकम्प बहुधा हुआ कहते हैं।

प्रचण्ड भूकम्प का आना पृथ्वी के भीतरी परिवर्तन से हुआ है। इन परिवर्तनों को हम देख नहीं सकते। पृथ्वी के अन्दर की चट्टान कभी-कभी टूटती तथा स्थानान्तरित होती रहती है। भूकम्प ऐसे क्षेत्र में अधिक होते हैं जहाँ भीतरी चट्टानों के टूटने तथा ऊपर-नीचे खिसकने के प्रमाण मिलते हैं। संभवतः इन क्षेत्रों में भू-संचालन अभी बन्द नहीं हुआ है। अनेक भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार पृथ्वी के भीतर धीरे-धीरे ताप कम होता जा रहा है। तापमान कम होने पर पृथ्वी सिकुडती है और उस भाग की ऊपरी ठोस

सतह नीचे बैठती है जिससे स्वर –भ्रंश होता है और भूकम्प होने लगता है।

जनवरी सन 1934 को बिहार का भूकम्प विख्यात है। इसके प्रभाव से उत्तर बिहार के कई क्षेत्र बाढ़ के जल से भर गये थे। मुंगेर और मुजफ्फरपुर शहर नष्ट-भ्रष्ट हो गये थे। हजारों लोगों की मृत्यु हो गयी थी। लाखों-लाख लोग भूखे नंगे व घर विहीन हो गये थे।

गया जिला के क्षेत्र में भी इसी वर्ष भूकम्प आया था फिर 1989 में व 2008 में भी भूकम्प के झटके आये थे। 1989 व 2008 के भूकम्प से अधिक क्षति नहीं हुयी थी।

गया जिला में बिहार राज्य के समान ही भूकम्प घटित हुआ था। यह 15 जनवरी को 2रू 39 अपराहन को आया था इस भूकम्प ने काफी चौड़े क्षेत्र में फैलकर भारत के अनेक क्षेत्रों को प्रभावित किया था। इसकी अवधि 2 से 25 मिनट की थी पर कुछ लोग इसकी अवधि 5 मिनट बताते है।

गया जिले में पडोसी जिले जैसे पटना तथा मुंगेर की तुलना में भूकम्प का प्रभाव कम पडा था। भूकम्प के प्रभाव से सडकों में दरार पड गयीं थीं तथा सैकड़ों मकान गिर गये थे। जिले में 84 लोगों की मृत्यु हो गयी थी तथा 88 लोग विभिन्न रूपों से घायल हो गये थे। गया के कलेक्टर का आवास एवं गया जेलर के आवास भी क्षतिग्रस्त हुये थे। गया शहर के अनेक कच्चे मकान गिर गये थे। गोवाल बिगहा उपर छिह पंच महला और नई गोदाम महल्ले अत्यधिक प्रभावित हुये थे। पर प्राचीन पिष्णु पद मंदिर एवं बोधगया मंदिर को ज्यादा क्षति नहीं हुई थी। लेकिन बोधगया की कुछ छोटी मूर्ति अपने स्थान से हट गयीं थीं। बोधगया मुख्य मन्दिर के शीर्ष कलसी अपने स्थान से हट गये थे। पर अन्दर गया के भवन जो अति प्राचीन हैं तथा घने बसे हैं उस भूकम्प का प्रभाव न के बराबर पडा यह एक आश्चर्य की बात है। अगर उस क्षेत्र में भूकम्प का विनाशकरी प्रभाव पडता तो बहुत ज्यादा जान-माल की क्षति होती।

बाढ़ से हानियाँ:

गया जिले में वर्षा का वितरण बिल्कुल समान नहीं है। यह मानसूनी वर्षा जब अधिक मात्रा में होती है तो वर्षा का जल धाराओं के रूप में पहाडी के उच्च भागों से अति गति से प्रवाहित होकर नदियों से मिलकर बहने लगता है। लेकिन तली काफी चौडी रहने के कारण वे अपने किनारे के भागों में बाढ़ उत्पन्न नहीं कर पाती जल्दी ही नीचे हो जाती है।

1946 में आयी बाढ़ का कुप्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों पर भी हुआ था रफीगंज ओबरा गोह थाना (जो अब औरंगाबाद जिला में है) बुरी तरह प्रभावित हुआ था। रफीगंज के पास के ग्रामीण तथा रफीगंज शहर की जनसंख्या बुरी तरह बाढ़ से प्रभावित हुये थे। उक्त अवसर पर मुफ्त अनाज तथा चारा बांटा गया विभिन्न प्रकार के कर्ज दिये गये 1946 के बाद 1948 में भी बाढ़ का प्रकोप देखा गया जो अत्यधिक वर्षा के कारण उत्पन्न हुयी थी। पहली अगस्त से 4 अगस्त तक अप्रत्यासित वर्षा लगभग पूरे जिला के क्षेत्र में हुयी थी जिससे सभी नदियाँ तथा सरितायें लबालब भर गयी थी गया शहर में कुछ दिनों में ही 11.5 ईन्च वर्षा हुयी थी जलस्तर 4 अगस्त से बढ़ना शुरू हुआ तथा 5 अगस्त तक सभी प्रभावित क्षेत्र तक बाढ़ का जल फैल गया। कुछ भागों में बाढ़ का रूप बहुत ही भयावह हो गया था। गया शहर 1946 की बाढ़ की तरह ही प्रभावित हो गया। गया शहर तथा निकटवर्ती थाना के सभी सडकें बाढ़ के प्रभाव से टुट गयी थीं गया का बैरागी महल्ला बहुत ही बुरे ढंग से प्रभावित हुआ था। रेलवे की पुलिया ध्वस्त हो गयी थी। ग्रामीण क्षेत्रों में नहरें टुट गयी थी।

1948 के बाढ़ के कुप्रभाव से भदई फसल बिलकुल नष्ट हो गयी तथा खेतों में बालू की पर्त जमा कर दी। कृषकों को खेत जोतने के पहले इस जमाये गये बालू को हटाना आवश्यक हो गया राहत के लिए नावें चावल चना मक्का तथा नमक बाँटे गये थे।?

अकाल से हानियाँ :

ओ मैली ने पाया कि गया जिला बाढ़ एवं आकाल से अप्रभावित क्षेत्र है। फिर भी लोग 1866 और 1874 में भूख तथा अनाज की कमी का अनुभव किया था। ओ मैली के अनुसार जिला के दक्षिणी-पच्छिम भागों में लोग इस कमी से अधिक पीडित थे। इन वर्षा के अभाव के कारण सूखे की स्थिति थी तो सिर्फ 1167 व्यक्तियों को ही राहत देने की आवश्यकता हुयी थी इसकी तुलना में घटित आकाल की अवधि में 4736 लोगों को राहत देने की आवश्यकता हुयी थी। लोगों का यह आकाल का कष्ट और भी बढ़ गया क्योंकि उसी समय कोलरा का प्रकोप गया शहर में जुलाई के मध्य को हो गया जो तथा यह जिला के आन्तरिक भागों तक फैल गया इस बिमारी का प्रकोप भयावह था।

सुखा एक अत्यधिक घातक प्राकृतिक प्रकोप माना जाता है। इसके कारण किसी प्रकार के जीवन –रूप में अस्तित्व के लिए आवश्यक तीन –वस्तुओं

(जल वायु और आहार) में से एक (जल) से सीधा और दूसरे (आहार) से अप्रत्यक्ष रूप से गहरा सम्बन्ध है क्योंकि फसलें पौधे तथा अन्य खाद्य जन्तु जल पर पूर्णतया आश्रित होते हैं। सूखे की उत्पत्ति जल के अभाव के संचली प्रभावों से होता है तथा इस प्राकृतिक प्रकोप के कारण कृषि तथा प्राकृतिक वनस्पति को भारी क्षति होती है तथा अकाल की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

गया जिला लगाकर बिहार के 28 जिले सूखाग्रस्त :-

कम बारिश अनियमित बारिश और लक्ष्य से धान की काफी कम बुनाई को देखते हुए 28 जिलों को राज्य मंत्रिपरिषद ने सूखाग्रस्त (प्राकृतिक आपदाग्रस्त) घोषित कर दिया है। तत्काल इन जिलों के सी0 आर0 एफ0 के नार्म लागू कर दिये गये हैं। मंत्रिपरिषद का मानना है कि शेष 10 जिलों की भी हालत ठीक नहीं है। मुख्य सचिव की गठित आपदा प्रबन्धन गुप को इन पद स जिलों के सम्बन्ध में निर्णय करने को अधिकृत कर दिया गया है। इन्हें सूखाग्रस्त घोषित करने के लिए मंत्रिपरिषद की मंजूरी लेने की आवश्यकता नहीं होगी। आपदा प्रबंधन सचिव ने बताया कि सूखाग्रस्त घोषित 28 जिलों में सूखे से निपटने के लिए आपदा राहत निधि राज्य आपदा रिस्पांस कोष से दिये जाने वाले सहायता प्रावधान तत्काल प्रभाव से लागू होंगे। इन जिलों में किसानों से सहकारिता ऋण राजस्व लगान सेंस पटवन शुल्क विद्युत शुल्क जो सीधे कृषि से सम्बन्धित हो की वसूली 2010-11 के लिए स्थगित रहेंगी। प्रभावित जिलों में फसल को बचाने के लिए उपलब्ध कराने पशु संसाधनों का सही रखरखाव करने आदि के लिए जरूरत के अनुसार सहायता कार्य चलाने अदि की व्यवस्था की जायेगी।

सूखाग्रस्त जिलें – गया जहानाबाद औरंगाबाद अरवल नवादा पटना नालंदा भोजपुर बक्सर रोहतास कैमूर मुंगेर शेखपुरा लखीसराय जमुई मधुबनी समस्तीपुर दरभंगा बेगुसराय भागलपुर बांका सिवान सारण मुजफ्फ सीतामढी शिवहर वैशाली पूर्वी चम्पारण

संदर्भ :-

1. राव वी0 पी0 एवं श्रीवास्तव वी0 के0 पर्यावरण एवं पारिस्थिति की 2007 गोरखपुर वसुन्धरा प्रकाशन पृ0 सं0 369
2. सिंह सविन्द्र और सिंह स्वेता पर्यावरण भूगोल 2007 इलाहाबाद प्रयाग पुस्तक भवन पृ0 355
3. चौधरी पी0 सी0 राय बिहार जिला राजपत्र – गया पटना सेक्रेटीएट प्रेस पृ0 219

को सूखाग्रस्त घोषित कर दिया। बाद में शेष 10 जिले भी सूखाग्रस्त घोषित कर दिये गये।

सरकार का मानना है कि कम बारिश और कम रोपनी के कारण उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पडने तय हैं। कृषि विभाग की रिपोर्ट के अनुसार 1 जून से 31 जुलाई तक राज्य में 508.5 मिलीमीटर की औसत बारिश के विरुद्ध 329 मिलीमीटर ही बारिश हुई है जो औसत से 23 फीसदी कम है।

सूखाड का कारण (2010):-

ग्रीष्म काल में उत्तरी गोलार्द्ध का स्थलीय भाग विशेषतः मध्य एशिया तथा भारत के राजस्थान क्षेत्रों में अति उच्च तापक्रम के कारण निम्न भार का क्षेत्र उत्पन्न हो जाता है। इसे भरने के लिए दक्षिणी गोलार्द्ध से हवाये चलती है। ये हवाएं जब बिषवत रेखा को पार करती हैं। तो इसकी दिशा द0 पूर्वी से बदल कर (फेरेल सिद्धान्तानुसार) दक्षिणी-पश्चिमी हो जाती हैं। जब ये हवाएं भारत के निकट पहुँचती हैं तो प्रायद्वीप विन्यास के कारण यह हवा दो भागों में बंट जाती है – अरबसागरिय शाखा एवं बंगाल की खाडी की शाखा से होती है। पर इस वर्ष यह शाखा अत्यन्त कमजोर पड गई है तो अरब सागरीय शखा शक्तिशाली होने से महाराष्ट्र गुजरात पंजाब हरियाणा यहाँ तक कि पाकिस्तान में भारी वर्षा हुयी है। इसी कारण बिहार राज्य सूखे की गिरफ्त में है।

अकाल की संभवनाये:- प्रदेश में सूखा संकट अकाल में बदल सकता है। कम बारिश के कारण स्थिति लगातार बिगडती जा रही है। राज्य सरकार सभी जिलों को सूखाग्रस्त घोषित कर चुकी है मगर स्थिति बिगडती ही जा रही है। राज्य मंत्रिपरिषद का मानना है कि सूखा की स्थिति में परिवर्तन नहीं होने पर यह अकाल का रूप ले सकता है।

मुख्य मंत्रियों ने क्षेत्रों के भ्रमण के दौरान जो महसूस किया विधायकों से इलाकों के संबंध में जो फीडबैक मिले उस पर कैबिनेट की बैठक में चिंता जाहिर की गयी। 1967 के अकाल से संकट की तुलना में की गयी।